BA Part II (Sub/GEN)

Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Sociology

Lecture IV

भारत में निर्धनता के प्रमुख कारण =)

IV) राजनीतिक कारण => निर्धनता के राजनीतिक पक्ष पर अनेक समाजशास्त्रियों, अर्थशास्त्रियों एवं राजनीति विज्ञान के विद्वानों का मत है कि निर्धनता उन देशों की समस्या है, जहां पर पूंजीवादी या सामंतवादी शासन प्रणाली को अपनाया गया है। इस व्यवस्था में राष्ट्र के आर्थिक संसाधन कुछ व्यक्तियों के हाथों में सिमट कर रह जाते हैं। इसके विपरीत समाजवादी या साम्यवादी देशों में यथा, चीन, रूस, चेकोस्लोवाकिया आदि में संपत्ति का वितरण असमान नहीं होने से निर्धनता एवं संपन्नता के बीच बहुत बड़ी खाई दिखाई नहीं देती है। गुन्नार मिर्डल ने गरीबी की राजनीति का विश्लेषण करते हुए लिखा है कि भारत के राष्ट्रीय नेतागण उस वर्ग से आते हैं जिसे साधन संपन्न वर्ग माना जा सकता है। मिर्डल के अनुसार गरीबी निवारण की राजनीतिक शक्ति उन लोगों के पास केन्द्रित है जो अपने ही हित में निर्धनता को बनाए रखना चाहते हैं। ब्लीनर ग्राहम का मत है कि निर्धनता-निवारण का राजनैतिक नारा निर्धनों ने कभी नहीं लगाया है। यह नारा उन लोगों की देन है जो स्वयं सुख सुविधा संपन्न हैं। अतः क्या उन राजनीतिज्ञों से निर्धनता हटाने का काम पूरा होने की कोई संभावना है, जो अमीर केवल निर्धन लोगों के सहारे बन गये हैं।

गुन्नार मिर्डल सभी राष्ट्रों में गरीबी का कारण नरम राज्य को मानते हैं। नरम राज्य से अभिप्राय उस सामाजिक अनुशासनहीनता की स्थिति से है, जो विभिन्न स्तरों पर एवं विभिन्न स्वरूपों में प्रकट होती है। इसमें कानून की कमियां अथवा कानून के पालन व उसे लागू करने की कमियां, विभिन्न स्तरों पर सरकारी अधिकारियों में भ्रष्टाचार शक्तिशाली समूहों में साठ-गांठ या नियमों को जानबूझकर अवहेलना करना आदि। नरम राज्य में सामाजिक आर्थिक व राजनीतिक दृष्टि से शक्तिशाली व्यक्ति निम्न वर्ग का शोषण करते हैं।

आधुनिक समय में युद्ध का भय या वास्तविक युद्ध चाहे वह अल्पकाल के लिए ही क्यों नही हो, आर्थिक व्यय इतना अधिक होता है कि इससे राष्ट्र दिवालियापन की स्थिति में आ जाता है। द्वितीय विश्वयुद्ध ने जापान, जर्मनी व अन्य राष्ट्रों को आर्थिक दृष्टि से तहस-नहस कर दिया था। युद्ध में पुरुषों की मृत्यु हो जाने से भी लोग आर्थिक उपयोगी इकाई में वंचित हो जाते हैं एवं परिवार की आय भी गिर जाती है जिसका परिणाम परिवार का और अधिक निर्धन हो जाना है।